अध्याय-प्रथम

प्रस्तावना

1.1 प्रस्तावना

आज की दुनियाँ दिन -प्रतिदिन प्रतिस्पर्धी होती जा रही है | प्रदर्शन की गुणवत्ता व्यक्तिगत प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कारक बनती जा रही है। उत्कृष्टता विशेष रूप से, अकादमिक और प्रायःअन्य सभी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण पहलू के रूपमें देखी जाती है। प्रत्येक माता–पिता की इच्छा होती है कि उनके बच्चे उत्कृष्ट प्रदर्शन करें | इस उपलब्धि के उच्च स्तर की इच्छा से हमारे बच्चों, छात्रों, शिक्षकों, संस्थाओं और सामान्य शिक्षा प्रणाली में बहुत ही दबाव पड़ता है तथा ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा की पूरी व्यवस्था शैक्षिक उपलब्धि के इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है | इस प्रकार हम देखते हैं कि अधिकांश स्कूलों का यही प्रयास रहता है कि वे बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि कैसे करें? शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए यह शोध का विषय है कि कौन-से कारक छात्रों की उपलब्धि को बढ़ावा देते हैं| कौन से कारक अकादमिक उत्कृष्टता की दिशा में योगदान करते हैं? ऐसे प्रश्नों के उत्तर देना मानव व्यक्तित्व की जटिलता के कारण आसान नहीं हैं। उत्कृष्टता में सुधार के लिए हम प्रायः प्रयास करते हैं एवं तरह-तरह की युक्ति का प्रयोग करते हैं | इसलिए शोधकर्ताओं द्वारा अनेक कारकों की परिकल्पना की जाती है और शोध भी किए किये जाते हैं | वे विभिन्न निष्कर्ष के साथ अपने परिणाम को सामान्यीकृत करते हैं | शैक्षणिक उपलब्धि पारिवारिक वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य एवं अध्ययन की आदत से भी निर्धारित होती है |

आकांक्षा- कोई व्यक्ति जो भी कार्य करता है उसमें एक निश्चित लक्ष्य या प्रवीणता प्राप्त करना चाहता है | लक्ष्य एवं आकांक्षायें व्यक्ति की क्षमताओं के अनरूप, उससे उच्च अथवा निम्न हो सकती हैं | कुछ व्यक्ति अपनी निष्पत्ति का उच्च-प्राक्कलन तथा कुछ व्यक्ति न्यून-प्राक्कलन करते हैं | कई लोग जो अपनी बौद्धिक क्षमता से अपरिचित होते हैं पर उच्च आकांक्षा रखते हैं, वे अक्सर नैराश्य का अनुभव करते हैं| किसी व्यक्ति की आकांक्षा के स्तर का वर्णन करने में वास्तव में हम उस व्यक्ति का

ही वर्णन करते हैं | वह व्यक्ति के भविष्य या भूत का पूर्वाभिमुखीकरण, उसका स्वयं में आत्मविश्वास, असफलता का भय, उसका आशावाद या निराशावाद, उसकी महत्वाकांक्षायें तथा वास्तविकता का सामना करने का साहस है | किसी के आकांक्षा स्तर की जाँच उसके व्यक्तित्व को समझने का एक प्रभावी तरीका है | आकांक्षा स्तर में अभिप्रेरणात्मक गुण होता है, जिसमें यह अधिगम के साथ घनिष्ट रूप से सम्बंधित होता है|

आकांक्षा शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम **डेम्बो (1931)** ने किया था | डेम्बो द्वारा इस शब्द के प्रयोग के पूर्व भी इस क्षेत्र में पहला प्रयोग **हाप (1930)** द्वारा किया गया था, जिसने यह निष्कर्ष निकाला कि किसी व्यक्ति के आकांक्षा स्तर की प्रकृति उसके व्यक्तित्व प्रारूपों को प्रतिबिम्बित करती है | **लेविन के डायनेमिक थ्योरी आफ पर्सनालिटी (1935)** के प्रकाशन के पश्चात् इस प्रकरण पर कार्य की महत्ता और बढ़ी | उसके बाद व्यक्तिव के एक महत्त्वपूर्ण विचार के रूप में इस संप्रत्यय को स्वीकार किया गया | **फ्रैंक (1941)** के अनुसार व्यक्ति किसी परिचित कार्य में किसी व्यक्ति की वह भावी निष्पत्ति जिसे व्यक्ति अपने पूर्व निष्पत्ति के ज्ञान के आधार पर प्राप्त करना चाहता है, आकांक्षा स्तर है| फ्रैंक के अनुसार व्यक्ति अपनी आकांक्षा को सम्भावित निष्पत्तियों को अपने समक्ष आने वाली कठिनाईयों के अनुसार एक श्रेणीक्रम में व्यवस्थित करता है|

बायड (1952) के अनुसार आकांक्षा स्तर का अर्थ है, किसी गत्यात्मक परिस्थिति में व्यक्ति की महत्वाकांक्षा अर्थात् किसी दिए गए कार्य पर भावी निष्पति हेतु व्यक्ति के लक्ष्य या अपेक्षा की उत्तम आशाएँ |

स्मिथ (1979) ने आकांक्षा स्तर को व्यक्ति के तात्कालिक लक्ष्य जो व्यक्ति की पहुँच के अंतर्गत हैं के रूप में परिभाषित करता है | व्यक्ति द्वारा निर्धारित स्तर की सफलता प्राप्त करने की इच्छा तथा असफलता से बचने की इच्छा के मध्य एक प्रकार का समझौता है | सफलता प्राप्त करने की इच्छा स्तर को ऊँचा उठाती है तथा दूसरी इसे नीचा गिराती है |

अतः आकांक्षा स्तर का पूर्व अनुभवों के आधारपर भावी निष्पति (लक्ष्य असंगति) के लिए अपनी क्षमता का आकलन (अधिक, कम या वास्तविकतापूर्ण) है | लक्ष्य निर्धारक व्यवहार के साथ–साथ लक्ष्य की प्राप्ति की प्रक्रिया व्यक्ति के पूर्व अनुभवों(सफलता-उन्मुख या असफलता-उन्मुख), इस दिशा में किये गए प्रयास का स्तर तथा लक्ष्य के लिए लगे रहने की व्यक्ति की क्षमता का परिणाम है | अतः आकांक्षा स्तर की परिस्थिति में मुख्य रूप से चार बिंदु आतें है|

1. पिछली निष्पत्ति
2. अगली निष्पत्ति के लिए आकांक्षा का निर्धारण
3. नयी निष्पत्ति तथा
4. नयी निष्पत्ति के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया

पिछली निष्पत्ति तथा नये लक्ष्य के बीच अंतर को **'लक्ष्य असंगति'** कहा जाता है, जबकि लक्ष्य स्तर तथा नयी निष्पत्ति के मध्य अंतर को **'उपलब्धि असंगति'** कहा जाता है | जितनी अधिक असंगति चाहे लक्ष्य या उपलब्धि में होगी, लक्ष्य प्राप्ति की सम्भावना जितनी ही कम होगी, व्यक्ति उतना ही अधिक निराशा का अनुभव करेगा | अतः अधिकतम संतुष्टि न तो उच्च-आंक्लन से न तो निम्न-आकलन से बल्कि वास्ताविकतायुक्त आकलन से जिसमें लक्ष्य अथवा उपलब्धि असंगति न्यूनतम होती है /प्राप्त होती है | व्यक्ति जहाँ तक पहुँच सकता है उसकी तुलना में निर्धारित लक्ष्य अगर बहुत ऊँचा है, तो व्यक्ति की असफलता का कोई अर्थ नहीं है | इसी तरह बिना किसी कठिनाई के व्यक्ति जहाँ पहुँच सकता है अगर निर्धारित लक्ष्य उससे बहुत कम है तो भी सफलता का कोई अर्थनहीं है | अतः व्यक्ति की आकांक्षा स्तर उस प्रसार के अंतर्गत आता है जहाँ वह यह महसूस करता है कि वह सफल होगा अथवा असफल| व्यक्ति क्या प्राप्त करना चाहता है इसमें काफ़ी व्यक्तिगत भिन्नता दिखाई पड़ती है | कुछ लोगों की महत्त्वाकांक्षा काफ़ी उच्च स्तर की होती है, कुछ की सामान्य तथा कुछ की अत्यंत निम्न स्तर की होती है | कुछ लोग अपनी सफलता या असफलता के अनुभवों के अनुरूप अपने आकांक्षा स्तर को जल्द परिवर्तित करते हैं, तो कुछ लोग लगातार असफल होने के बावजूद भी

अपने उच्च लक्ष्य से चिपके रहते हैं | अतः यह स्पष्ट है कि मानव व्यवहार तथा व्यक्ति के लक्ष्य प्राप्ति के प्रभावों के सन्दर्भ में आकांक्षा स्तर की महत्त्वपूर्ण भूमिका है | वस्तुतः आकांक्षा स्तर एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत अभिप्रेरक माना गया है | शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि आकांक्षा स्तर से तात्पर्य उस स्तर से होता है जिसकी व्यक्ति इच्छा करता है | मनोवैज्ञानिकों ने आकांक्षा स्तर का प्रयोग थोड़ा वैज्ञानिक अर्थमें किया है | आम मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि आकांक्षा स्तर से तात्पर्य एक ऐसे मानदंड से होता है जिसे व्यक्ति स्वयं निश्चित करता है और जिसके आधार पर वह स्वयं ही सफलता या असफलता की अनुभूति करता है|

करलिंगर ने एक अध्ययन किया जिसमें यह दिखाया गया है कि व्यक्ति का आकांक्षा स्तर उस सामाजिक समूह पर निर्भर करता है जिसमे वह अपने सम्बन्धन के बाद कुछ छात्रों से यह कहता है कि उनका उस कार्य पर निष्पादन कॉलेज के स्नातक छात्रों के निष्पादन से भी अधिक है | जब इन दोनों तरह के छात्रों को पुनः उसी कार्य को करने के लिए दिया गया तो पाया गया कि जिन छात्रों का निष्पादन स्नातक छात्रों के निष्पादन से भी अधिक बताया गया उनका निष्पादन दूसरी बार में काफी कम हो गया तथा उनका आकांक्षा स्तर भी पहले की तुलना में कम हो गया | सामान्यतः आकांक्षा स्तर या किसी लक्ष्य को निर्धारित करने में व्यक्ति अपनी सफलताओं एवं क्षमताओं को ध्यान में रखता है | यदि व्यक्ति यह सोचता है कि उसमे अमुक कार्य करने की क्षमता है तथा उसे ऐसा ही कार्य करने में पहले सफलता भी मिल पाई है तो वह अपना आकांक्षा स्तर कुछ ऊँचा निर्धारित करता है | यदि उसका उपलब्धि स्तर आकांक्षा स्तर के बराबर या उससे अधिक होता है, तो व्यक्ति को सफलता की अनुभूति होती है | परन्तु यदि उसका उपलब्धि स्तर आकांक्षास्तर के नीचे रहता है, तो इससे व्यक्ति में असफलता की अनुभूति होती है । उपलब्धि स्तर के मान में से आकांक्षा स्तर के मान को घटा लेने से जो अंक प्राप्त होता है, उसे उपलब्धि अंतर प्राप्तांक कहा जाता है | उपलब्धि अंतर प्राप्तांक धनात्मक होने पर सफलता तथा ऋणात्मक होने पर असफलता का पता चलता है | दो अन्य पदों अर्थात् लक्ष्य अंतर तथा निर्णय अंतर का उपयोग आकांक्षा स्तर के प्रयोगों के परिणाम के विश्लेषण में मनोवैज्ञानिक

द्वारा किये गए हैं | अगले प्रयास के आकांक्षा स्तर के मान में से पिछले प्रयास का उपलब्धि स्तर के मान को घटा लिया जाता है, तो इससे लक्ष्य अंतर प्राप्तांक का पता चलता है| लक्ष्य अंतर प्राप्तांक धनात्मक होने से यह पता चलता है कि व्यक्ति अपना लक्ष्य अपनी उपलब्धि से ऊँचा रखता है | परन्तु यदि यह अंतर प्राप्तांक ऋणात्मक होता है तो इससे यह पता चलता कि व्यक्तिअपना लक्ष्य अपनी उपलब्धि से नीचे रखता है |

एटकिन्सन के अनुसार अपने लक्ष्य को अपनी उपलब्धि से ऊपर रखने वाले लोग यथार्थवादी प्रकृति के होते हैं | निर्णय अंतर तीसरा महत्त्वपूर्ण संप्रत्यय है| किसी प्रयास में उपलब्धि स्तर के मान में से उसी प्रयास के निर्णय के मान को घटा देने पर जो प्राप्त होता है, वह निर्णय अंतर प्राप्तांक कहलाता है| यह प्राप्तांक भी धनात्मक या ऋणात्मक होता है|

मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से विशेषकर **हिलगार्ड तथा मास्लो** के प्रयोगों से यह स्पष्ट हो गया है, कि सामान्य व्यक्तियों के आकांक्षा स्तर तथा उपलब्धि स्तर में अधिक अंतर नहीं होता है | अतः यदि किसी व्यक्ति के इन दोनों स्तरों में अंतर होता है, तो इससे उसके व्यवहारों में अस्वाभाविक तथा यथार्थवादिता का गुण प्रदर्शित होता है | जिस व्यक्ति का उपलब्धि अंतर तथा निर्णय अंतर तीनों ही धनात्मक होते हैं (और यदि उपलब्धि, लक्ष्य तथा निर्णय को समय त्रुटि आदि ईकाइयों में व्यक्त किया गया हो) तो इससे व्यक्ति की आशावादी प्रकृति का पता चलता है, परन्तु जब ये ऋणात्मक होते हैं, तो इससे व्यक्ति के निराशावादी होने का पता चलता है | व्यक्ति का आकांक्षा स्तर कई कारकों से प्रभावित होती है | **टेरेल (1975)** ने पारिवारिक वातावरण के कुछ पक्षों का आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का मूल्यांकन करने के पश्चात् निष्कर्ष निकाला कि पारिवारिक वातावरण तथा संरचना एवं आकांक्षा स्तर में सम्बन्ध है |

1.2 अभिभावकीय आकांक्षा

यदि हम अभिभावकीय आकांक्षा को परिभाषित करते हैं, तो हमें पूर्ववर्ती शोधों में दो शब्द मिलते हैं एक Aspiration (आकांक्षा) और दूसरा Expectations (अपेक्षा) | मोनिका जैकब ने इस प्रकार

से परिभाषित किया है "Aspirations may be thought of as "hope" or desire while expectations may be thought of as a more realistic belief".

अभिभावकीय आकांक्षा एवं अभिभावकीय अपेक्षा में कुछ विरोधाभास है | अभिभावकीय आकांक्षा का तात्पर्य अभिलाषा, कामना या ऐसा लक्ष्य जिसे अभिभावक अपने बच्चों के भावी भविष्य के लिए निर्माण करते हैं एवं अपेक्षा शब्द का प्रयोग बच्चा यथार्थ में क्या प्राप्त करेगा इसकी आशा की जाती है **(Senginer,1983)** | यदि हम अभिभावकीय आकांक्षा का विस्तार करते हैं तो आकांक्षा का प्रयोग अभिभावक के व्यक्तिगत लक्ष्य एवं समुदाय के मानकों पर निर्धारित होता है| **(Aston and Mclanahan 1991; Carpenter 2008)** | यद्यपि अभिभावकीय आकांक्षा एवं अभिभावकीय अपेक्षा शब्द संप्रत्यय के दृष्टिकोण से भिन्न है, परन्तु ये कभी-कभी आपस में एक दूसरे के जगह प्रयोग किये जाते हैं **(Fan and Chen 2001; Jung and Silbereisen 2002; Mau 1995)** |

1.3 पारिवारिक परिवेश और अकादमिक उपलब्धि

"The family is the only socially recognized relation for child bearing and the essential agency for child rearing, socialization, and introducing the child to the culture of the society, thereby shaping the basic character structure of our culture and forming the child's personality." (Frank, 1948)

शिशु अपने जीवन की शुरुआत माता-पिता के स्नेह और देख-रेख में आरंभ करता है एवं अन्य प्रियजन जो परिवार के साथ जुड़े रहते हैं, उनके प्यार के साथ वह बढ़ता है। जैसे-जैसे वह बढ़ता है जीवन का प्रथम पाठ अपने परिवार से ही सीखता है और आदतों को आत्मसात करने की कोशिश करता है | परिवार के आदर्श और अपने परिवार के सदस्यों का व्यवहार आजीवन उसे प्रभावित करता है। बच्चों की परवरिश के लिए परिवार से बेहतर कोई संस्था नहीं है। वह परिवार के सभी सदस्यों के क्रिया-प्रतिक्रिया से बहुत सी बातें सीखता है|

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि परिवार का प्रत्येक सदस्य बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं |

सीखना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है | बालक अपने परिवेश तथा विद्यालय में बहुत कुछ सीखता है | परिवेश में अभिभावक, समाज तथा विद्यालय में शिक्षक विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं | इन सब क्रियाओं का प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है | विद्यालय का प्रत्येक प्रयास विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए होता है | विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक तथा समाज प्रत्येक इसी पर विशेष ध्यान देते हैं कि किस प्रकार विद्यार्थियों में केवल अच्छे गुणों का ही विकास किया जाये तथा उसको शैक्षिक रूप से एक सुयोग्य नागरिक बनाये जाने हेतु प्रयास किया जाये| शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उन परीक्षणों से है, जो छात्र के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं | विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों में छात्रों ने क्या सीखा है, इसका मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है | अतः कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि परीक्षण कहते हैं | उपलब्धि परीक्षण प्राय: शिक्षा उद्देश्यों पर आधारित होते हैं तथा इनसे उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है | विद्यालय, शिक्षक तथा समाज के लिए उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कारक है|

इन सभी के कार्यों की श्रेष्ठता का निष्पादन भी केवल उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से आँका जाता है | यदि किसी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च है, तो उस विद्यालय को भी श्रेष्ठ माना जाता है तथा यदि विद्यार्थी पिछड़े हुए हों तो विद्यालय की श्रेष्ठता भी कम हो जाती है| अतः यदि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है तभी विद्यालय, शिक्षक तथा समाज के कार्यों को सार्थक माना जाता है, अन्यथा की स्थिति में उनके सभी प्रयास निरर्थक साबित होते हैं|

कई बार विभिन्न प्रयासों के बाद भी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होती | विद्यालय, शिक्षक तथा समाज अपनी ओर से सभी अनुकूल प्रयास करते हैं परन्तु फिर भी विद्यार्थी पिछड़ जाता है तथा लगातार पिछड़ता चला जाता है | इसका अर्थ यह है कि इन सभी प्रयासों के अतिरिक्त भी अन्य कई कारक ऐसे होते हैं, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं | यहाँ पर सभी के लिए समस्या उत्पन्न हो जाती है कि वे यह जानने का प्रयास करें कि वे कौन से कारक हैं, जिनकी वजह से बच्चा शैक्षिक रूप से लगातार पिछड़ता चला जा रहा है |

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर दो प्रकार के कारकों का प्रभाव मुख्य रूप से पड़ता है– संज्ञानात्मक कारक (Cognitive Factors) असंज्ञानात्मक कारक (Non-Cognitive Factors) | विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों में से उन्होंने ऐसे कारक जिनका सम्बन्ध बच्चों की बुद्धि से है, उन्हें संज्ञानात्मक कारक या बौद्धिक कारक (Intellectual Factors) माना तथा वे कारक जो बच्चे की बुद्धि के अलावा अन्य कारकों से सम्बंधित थे उन्हें असंज्ञानात्मक अथवा अबौद्धिक कारक(Non-intellectual Factors) माना | हम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्रमुख कारकों को निर्धारित करने से पूर्व दोनों प्रकार के कारकों को बताने का प्रयास करते हैं |

1.4 संज्ञानात्मक कारक / बौद्धिक कारक

(Cognitive Factors / Intellectual Factors)

बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर बौद्धिक या संज्ञानात्मक कारक का गहरा प्रभाव पड़ता है | इस प्रकार के कारकों या निर्धारकों में बुद्धि-कारक विशेष रूप से उल्लेखनीय है | साधारणतः विश्वास किया जाता है कि बुद्धि तथा उपलब्धि के बीच सीधा धनात्मक सम्बन्ध है| विश्वास किया जाता है कि बौद्धिक स्तर के बढ़ने पर उपलब्धि स्तर भी बढ़ता है | जो बच्चा जितना ही अधिक बुद्धिमान होता है उसकी शैक्षिक उपलब्धि उतनी ही अधिक होती है |

परन्तु प्रयोगों से पता चलता है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा बौद्धिक योग्यता के बीच कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है | साधारणतः शैक्षिक कार्य में अच्छी उपलब्धि के लिए 75 बुद्धि-लब्धि (I.Q.) अपेक्षित है | परन्तु बहुत सारे बच्चे इतनी बौद्धिक योग्यता रखते हुए भी विद्यालय कार्य में या तो बहुत कम प्रगति कर पाते हैं या पूर्णतः असफल रहते हैं|

एलिस (Ellis, 1996) के अनुसार 70 से 85 बुद्धि–लब्धि वाले बच्चे अपने कार्यों में अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने में असफल रहते हैं|

"Educational or academic achievement is a specified level of attainment or proficiency in academic work as evaluated by teachers, by standards tests or a combination of both"

बर्ट (Burt, 1921) के अनुसार 85 से 95 बुद्धि वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि औसत बुद्धि के बालकों की तुलना में बहुत कम होती है| उन्होंने भिन्न–भिन्न बौद्धिक स्तर के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन किया और पाया कि 100 बुद्धिलब्धि वाले बच्चों की 85 से 90 बुद्धिलब्धि वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धियाँ विशिष्ट प्रशिक्षिण देने के बावजूद कम

थी |

प्रोक्टर (Proctor, 1918) ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों का अध्ययन किया और देखा कि 95 या इससे कम बुद्धिलब्धि वाले 70 प्रतिशत विद्यार्थी अपने अधिकांश शैक्षिक कार्यों में असफल रहे|

टरमन (Terman, 1926) के अनुसार, शैक्षिक उपलब्धियाँ अच्छी हों, इसके लिए 95 से 105 बुद्धिलब्धि अपेक्षित है| उन्होंने इस बौद्धिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का सर्वेक्षण किया और देखा कि रोग आदि के कारणों से बाधा उत्पन्न होने के बावजूद सभी विद्यार्थियों में लगातार प्रगति हुई | उन्होंने

अपने सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकाला कि जिस प्रकार औसत बुद्धि के बच्चे मंद बुद्धि के बच्चों से शैक्षिक प्रगति में आगे होते हैं, उसी तरह तीव्र बुद्धि के बच्चे औसत बुद्धि के बच्चों से आगे होते हैं|

प्रोक्टर एवं टरमन (Proctor and Terman, 1998) ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों तथा उनकी बौद्धिक योग्यता के बीच सम्बन्ध देखने का प्रयास किया| उनके द्वारा प्राप्त आकड़ें निम्नलिखित हैं:-

तालिका : 1.1 - प्रोक्टर एवं टरमन द्वारा प्राप्त किये गए हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों तथा उनकी बौद्धिक योग्यता के बीच सम्बन्ध के आँकड़ो की तालिका|

अंक (Marks)	औसत बुद्धिलब्धि (Average I.Q.)	विद्यार्थियों की संख्या (No. of students)
50-59	94	02
60-69	100	17
70-79	107	56
80-89	110	24
90-99	123	04

स्पष्ट है कि मोटे तौर पर बढ़ते हुए बौद्धिक-स्तर के साथ विद्यार्थियों की उपलब्धि बढ़ती गयी| परन्तु व्यक्तिगत रूप से जाँच करने पर कई अपवाद मिले| प्रथम वर्ष के अंत में जिन 13 विद्यार्थियों ने पढ़ाई छोड़ दी उसमे 10 की बुद्धिलब्धि 105 से कम थी|

टरमन (Terman, 1926) ने हाई स्कूल के 542 प्रतिभाशाली बच्चों का अध्ययन किया, जिनकी बुद्धिलब्धि 140 से कम थी| देखा गया कि उनमें 82 प्रतिशत बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि शानदार तथा सराहनीय थी| इन बच्चों की प्रतिभा आरंभ से ही दृष्टिगोचर होने लगी थी और वे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य में भी बेहतर थे| बौद्धिक जिज्ञासा अधिक से अधिक सूचना प्राप्त करने की इच्छा,

सीखने- पढ़ने की इच्छा, आदि लक्षण शुरू से ही देखे गये| कालेज स्तर की शिक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु कितनी बुद्धि चाहिए, इसकी निश्चित जानकारी नहीं हो सकी है | सामान्य रूप से विश्वास किया जाता है कि बौद्धिक स्तर जितना ऊँचा हो उपलब्धि उतनी ही अच्छी होती है| **एलिस (Ellis, 1969)** के अनुसार कालेज स्तर की शिक्षा में अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने हेतु कम से कम120 बुद्धिलब्धि अपेक्षित है, शर्त यह है कि अन्य बातें अनुकूल हों|

स्पष्ट यह है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा बौद्धिक योग्यता के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध है, परन्तु इसकी मात्रा कम है | इसका अर्थ यह है कि शैक्षिक तथा बौद्धिक योग्यता के बीच सम्बन्ध को प्रभावित करने वाले कई मध्यवर्ती चर हैं, जिनमे पाठ्यक्रम रुझान, उपलब्धि आवश्यकता, अभिरूचि आदि मुख्य हैं|

अतः उपरोक्त अध्ययनों से इस बात की पुष्टि होती है कि बुद्धि परीक्षण में उच्च अंक पाने वाले छात्र अपने विद्यालय में उच्च उपलब्धि प्राप्त करते हैं, फिर भी निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता है कि उच्च उपलब्धि का आधार केवल उच्च बौद्धिक स्तर है | कारण, बुद्धि के अलावा अन्य कई कारक जैसे प्रेरणा, निर्देश का गुण, पारिवारिक आर्थिक स्थिति, माता-पिता के सहयोग तथा अभिजात समूह मानक भी इसके आधार हो सकते हैं| दूसरी बात यह है कि बुद्धि तथा उपलब्धि के बीच पूर्ण सहसंबंध नहीं होता है| कई कारणों से उच्च बौद्धिक स्तर के बालक शानदार उपलब्धि में पिछड़ जाते हैं, जबकि अपेक्षाकृत निम्न बौद्धिक स्तर के बालक शानदार उपलब्धि प्राप्त कर लेते हैं| अतः शैक्षिक उपलब्धि एक मात्रा निर्धारक बौद्धिक स्तर नहीं हो सकता है | इसी तरह शिक्षण असमर्थता (Learning Disabilities) वाले छात्र बुद्धि में औसत या औसत से ऊपर होते हुए भी निम्न शैक्षिक उपलब्धि के होते हैं (Ormond, 1995) |

1.4.1 असंज्ञानात्मक या अबौद्धिक कारक (Non- intellectual or Non Cognitive Factors)

बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर कुछ ऐसे कारकों का प्रभाव पड़ता है, जिनका सम्बन्ध उनकी बौद्धिक योग्यता से नहीं होता है | ऐसे कारकों या निर्धारकों को अबौद्धिक अथवा असंज्ञानात्मक कारक कहते हैं | इनमे निम्नलिखित कारक या निर्धारक मुख्य हैं–

1.4.1.1 उपलब्धि आवश्यक (Need Achievement)

साधारणतःअर्थ में किसी चीज के अभाव को आवश्यकता कहते हैं | असंतुलन अथवा अभाव की स्थिति को आवश्यकता कहते हैं | **लेविन** के अनुसार आवश्यकता का अर्थ ऐसी शक्ति है जो किसी वस्तु में कोई विशेष मूल्य उत्पन्न कर देती है| उन्होंने आवश्यकता तथा प्रणोदन के बीच कोई मौलिक अंतर नहीं माना| **हल** के अनुसार शरीर में किसी वस्तु के अभाव से जो एक विशेष अवस्था उत्पन्न होती है, उसे ही आवश्यकता कहते हैं |

उपलब्धि आवश्यकता का तात्पर्य अर्जन करने के प्रेरक से है | किसी कार्य को करते समय उसमें सफलता प्राप्त करने की इच्छा को उपलब्धि आवश्यकता कहते हैं |

बच्चों के शैक्षिक निष्पादन पर इस प्रेरक का गहरा प्रभाव पड़ता है | बौद्धिक योग्यता समान रहने पर भी उच्च उपलब्धि आवश्यकता वाले बच्चे निम्न उपलब्धि आवश्यकता वाले बच्चों से अधिक शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर लेते हैं, जब उनमें उपलब्धि आवश्यकता तीव्र होती है | एलिस (Ellis, 1996) के अनुसार बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच 0.40 से 0.75 तक का सहसंबंध होता है| उनके अनुसार तीव्र बुद्धि के बालक उतनी सफलता नहीं प्राप्त कर पाते हैं, जितना कि उनसे अपेक्षित है| दूसरी ओर मंद बुद्धि के बच्चे अपेक्षित एवंसम्भावित उपलब्धि से अधिक सफलता प्राप्त करते हैं | इसका प्रधान कारण उपलब्धि आवश्यकता है | शिक्षक तथा अभिभावक मंद बुद्धि के बच्चों को पढ़ने लिखने के लिए जितना प्रोत्साहित एवं प्रेरित करते हैं, उतना तीव्र बुद्धि के बच्चों को नहीं करते

हैं| माता-पिता तथा शिक्षकों के दबाव के कारण मंद बुद्धि के बच्चों में उपलब्धि आवश्यकता बढ़ जाने से उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर ऊँचा हो जाता है |

लोवेल (Lowell, 1952) के अध्ययन से प्रमाणित होता है कि बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का एक प्रधान निर्धारक उपलब्धि आवश्यकता है | उन्होंने कालेज के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके उनके उपलब्धि आवश्यकता के बीच सम्बन्ध देखने का प्रयास किया| उन्होंने देखा कि जिन छात्रों ने उपलब्धि आवश्यकता के परीक्षण पर अधिक अंक पाये उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक थी | इस परीक्षण पर कम अंक पाने वाले छात्रों में शैक्षिक सफलता कम पाई गयी| प्रयोगकर्ता ने इस अंतर का कारण बुद्धि का नहीं बल्कि उपलब्धि आवश्यकता को माना|

कोफर एवं अपलेय (Cofer and Appley, 1964) के अनुसार उपलब्धि आवश्यकता का प्रभाव बच्चों के शिक्षण पर कई रूपों में देखा जा सकता है | तभी तो इस प्रेरक के कारण बच्चे तेज रफ्तार से सीखते हैं, और कभी समय पर अपने काम को पूरा करते हैं| चाहे जो भी हो, इतना सत्य है कि बच्चों के निष्पादन पर उपलब्धि आवश्यकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है |

1.4.1.1.1 पारिवारिक पृष्ठभूमि कारक (Factors FamilyBackground)

शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक एवं सामाजिक कारकों का गहरा प्रभाव पड़ता है| अध्ययनों से पता चलता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थितिं के बच्चों में शैक्षिक उपलब्धि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बच्चों की अपेक्षा अधिक होती है | पहले वर्ग के बच्चों को वातावरण-उत्तेजन अधिक मिलता है, जबकि दूसरे वर्ग के बच्चे इस उत्तेजन से वंचित रहते हैं| **कोलमैन (Coleman, 1996)** ने Equality of Education Opportunity नामक अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट शब्दों में बताया की निम्न आर्थिक स्तर के बच्चे शैक्षिक उपलब्धि में पिछड़ जाते हैं | उन्होंने सलाह दी कि ऐसे बच्चों के उपलब्धि-स्तर को बढ़ाने हेतु यह जरुरी है कि उन्हें उच्च आर्थिक स्तर के बच्चों के साथ एक ही शिक्षालय में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया जाए | भारत में किये गए अध्ययनों से भी इसी तरह के परिणाम मिले |

जैसा कि हम जानते हैं कि बालक को समूह की संस्कृति की जानकारी देने तथा उसके समाजीकरण के कार्य में माता-पिता प्राथमिक अभिकर्ता का काम करते हैं | बीसवीं शताब्दी के शोधार्थियों ने इस बात पर जोर दिया कि आरंभिक काल के अनुभवों का बालक के व्यवहार और अभिवृत्ति पर कितना महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है | फ्रायड और एडलर ने भी जोर देते हुए बताया है कि यदि माता-पिता बालक की अतिरिक्त देखभाल करते हैं और जरुरत से ज्यादा लाड़-प्यार करते हैं तो बालक में मनस्ताप (Neurosis) के प्रति उन्मुखता बढ़ जाती है | यदि माता-पिता बहुत कठोर होते हैं, तो बालक न केवल उनके प्रति बल्कि अन्य सभी व्यस्क लोगों की सत्ता के प्रति विद्रोह की प्रवृत्ति अपना लेता है | दूसरी ओर मातृत्व के अभाव के बारे में जो अध्ययन हुए हैं, अर्थात् ऐसे बालकों से सम्बन्धित अध्ययन जो अपनी माताओं से अलग होकर किन्हीं संस्थाओं में पालेजाते हैं , उनसे प्रकट होता है कि पारिवारिक सम्बन्धों की बालक के विकास की दृष्टि से कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका है पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ- साथ बच्चों के माता-पिता की अभिवृत्ति भी उनके विकास को प्रभावित करती है | यहाँ तक कि 1947 में भी भारत में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अपव्यय की मात्रा बहुत अधिक थी | पहली कक्षा में भर्ती होने वाले बच्चों की केवल 27 प्रतिशत संख्या ही पांचवी कक्षा तक पहुँच पाती थी | शेष 73 प्रतिशत बच्चे माता-पिता द्वारा स्कूल से उठा लिए जाते थे, क्योंकि माता-पिता उनसे घर का काम करवाना और गाय-भैसों की देखभाल करवाना चाहते हैं| कभी-कभी यह भी होता है कि वे अधिक सम्पन्न घरों में अपने बच्चों से नौकरी करवाना चाहते हैं | इस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों को एक आर्थिक संपत्ति के रूप में देखते हैं| दूसरों को काम के लिए रखकर उन्हें वेतन देने की बजाय वे अपने बच्चों से ही काम करवाते हैं और इस प्रकार उन्हें प्राथमिक शिक्षा से वंचित कर देते हैं|

1.4.1.2 विद्यालयी वातावरण (School Environment)

व्यक्ति जहाँ भी हो उसके इर्द-गिर्द कुछ वस्तुएं अवश्य होती हैं, जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस पर पड़ता रहता है | इन्हीं वस्तुओं के समूह को वातावरण कहा जाता है, एक बालक अपने कमरे में बैठ कर किसी पाठ का अध्ययन कर रहा है, उसके सामने टेबल पर पुस्तकें, कलम आदि हैं | पंखे से हल्की-हल्की हवा आ रही है | रेडियो से गीत के मीठे-मीठे स्वर सुनाई पड़ रहे हैं | अतः टेबल, पुस्तक, कलम, हवा, गीत आदि उत्तेजनाओं के समूह से निर्मित परिवेश को ही वातावरण कहा जायेगा| कारण यह है कि इन सारी वस्तुओं का प्रभाव बालक पर पड़ रहा है|

विद्यालय ही एकमात्र वह साधन है, जिसके द्वारा शिक्षित नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है | जॉन ड्यूवी के अनुसार, "विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है", जहाँ जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इसउद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हों|

बाल कृष्ण जोशी के अनुसार, " विद्यालय ईट और गारे की बनी हुई इमारत नहीं है जिसमें विभिन्न प्रकार के छात्र और शिक्षक होते हैं | विद्यालय-बाज़ार नहीं है, जहाँ विभिन्न योग्यताओं वाले अनिच्छुक व्यक्तियों को ज्ञान प्रदान किया जाता हैं | विद्यालय रेल का प्लेटफार्म नहीं है, जहाँ विभिन्न उद्देश्यों से विभिन्न व्यक्तियों की भीड़ जमा होती है | विद्यालय कठोर सुधारगृह नहीं हैं, जहाँ किशोर अपराधियों पर कड़ी निगरानी रखी जाती है | विद्यालय आध्यात्मिक संगठन है, जिसका अपना स्वयं का विशिष्ट व्यक्तित्व है | विद्यालय गतिशील सामुदायिक केंद्र हैं, जो चारों ओर जीवन और शक्ति का संचार करता है| विद्यालय एक आश्चर्यजनक भवन है, जिसका आधार सद्भावना, माता-पिता की सद्भावना , छात्रों की सद्भावना | सारांश में सुसंचालित विद्यालय - एक सुखी परिवार, एक पवित्र मंदिर, एक सामाजिक केन्द्र, लघु रूप में एक राज्य और मनमोहक वृन्दावन है, जिसमें इन सब बातों का सुन्दर मिश्रण होता है|

इसके विपरीत आज विद्यालय के वातावरण के प्रभाव को शिक्षक भलीभांति जानते हैं| वे जानते हैं कि विद्यालय निष्प्राण का ज्ञान नहीं, वरन स्फूर्तिमय जीवन का केंद्र होता है | यह अपने चारों ओर के जीवन और वास्तविकताओं से प्रत्यक्ष और घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है|

शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षालय के वातावरण, अनुशासन आदि का प्रभाव पड़ता है| जिस शिक्षालय में उत्तेजना तथा उत्प्रेरणा का वातावरण होता है, वहां के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है| जिस शिक्षालय में ऐसे वातावरण का अभाव होता है, वहां के बच्चों में यह उपलब्धि कम होती है| शिक्षालय के दोषपूर्ण वातावरण के कारण पढ़ाई छोड़ने की संख्या बढ़ जाती है| **डैलाकैटो (Delacato, 1993), केपहर्ट (Kephart, 1971)** आदि के अध्ययन से बच्चों की शैक्षिक प्रगति में शिक्षालय के वातावरण का महत्त्व प्रमाणित होता है | कई अध्ययनों से पता चलता है कि शैक्षिक उपलब्धि का मुख्य निर्धारक शैक्षिक वातावरण है|

1.4.1.3 संवेगात्मक कारक (Emotional Factors)

व्यक्ति के जीवन में संवेगों का महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु बालकों के जीवन में इनका अपेक्षाकृत बहुत अधिक महत्व है क्योंकि उनके विकास पर उनके भावी व्यक्तित्व की आधारशिला के निर्माण पर इनका व्यापक प्रभाव पड़ता है | संवेग भाव जब बढ़ जाता है तो शरीर उद्दीप्त हो उठता है और इस उद्दीप्तावास्था को ही संवेग (भय, क्रोध, प्रेम, दु :ख, शर्म, चिंता आदि) कहते हैं | इन संवेगों के कारण व्यक्ति कभी-कभी इतना उद्दीप्त हो जाता है या भड़क उठता है कि जाति, धर्म, देश, और मानवता के लिए मर मिटता है अथवा किसी घटना विशेष के घटित होने पर अनचाहा असामान्य काम कर बैठता है | अधिकाँश मनोवैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि संवेग एक ऐसी जटिल अवस्था है जिसमें व्यक्ति किसी वस्तु अथवा परिस्थिति को अधिक बढ़ा हुआ प्रत्यक्षी करता है, इसमें बड़े स्तर पर शारीरिक परिवर्तन होते हैं और व्यक्ति का व्यवहार अत्यधिक आकर्षण या प्रतिकर्षण की सूचना देता है|

1.4.1.4 मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि

शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ बालक किसी भी विषय को शीघ्रतापूर्वक सीख लेते हैं जबकि अस्वस्थ बालक काफी पीछे रह जाते हैं |

हम देखते हैं कि आज के मानव का जीवन जटिल होता जा रहा है| प्राचीन समाज में व्यक्ति का जीवन सरल और साधारण होता था| उनकी आवश्यकतायें सीमित होती थीं और उन्हें पूरा करने में कोई कठिनाई नहीं होती थी | लेकिन धीरे- धीरे उसके रहन-सहन और आचार-व्यवहार में काफी परिवर्तन हुआ, समाज की व्यवस्था भी काफी बदली | जीवन में सभी जगह सफल होने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपने आप को परिवेश की दशाओं के साथ बदलता रहे| समायोजन के लिए मानसिक स्वास्थ्य का अच्छा होना आवश्यक है | अच्छे मानसिक स्वास्थ्य वाला व्यक्ति ही अपने आप को भौतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में समायोजित कर पाता है | जिन व्यक्तियों का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं होता वे जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का सामना सफलतापूर्वक नहीं कर सकते | उनका जीवन कुंठित और असफलताओं से युक्त रहता है| शिक्षा के क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य का पर्याप्त महत्व है |

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है मन का स्वास्थ्य | जिस प्रकार शारीरिक स्वास्थ्य का अर्थ शरीर के सभी बाह्य एवं आन्तरिक अंगो के अपनी-अपनी जगह सही होने और उनके सही रूप में कार्य करने से होता है, उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मन के अपनी जगह सही होने और उसके सही रूप में कार्य करने से होता है | इस सन्दर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि शरीरशास्त्री (विशेषज्ञ डॉक्टर) तो शरीर के प्रत्येक बाह्य एवं आन्तरिक अंगोंयहाँ तक कि उसके मस्तिष्क के रचना को भी यंत्रों द्वारा देख-समझ सकते हैं और उनमें आने वाले विकारों को भी देख समझ सकते हैं । परन्तु मनः शास्त्री(विशेषज्ञ मनोवैज्ञानिक) अब तक न तो किसी के यन्त्र से मन को देख-समझने में समर्थ हुए हैं और न उसमें आने वाले विकारों को सीधे देखने समझने में समर्थ हुएहैं | वे मनुष्य के मन में आये किसी विकार को

उस विकार से मनुष्य के सामान्य व्यवहार में होने वाले परिवर्तन के रूप में देखते-समझते हैं और इस दृष्टि से वे मानसिक रूप से उस व्यक्ति को स्वस्थ मानते हैं, जो हर परिस्थिति में मानवोचित एवं समायोजित सन्तुलित व्यवहार करता है |

लैडले के शब्दों में, "मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है, वास्तविकता के धरातल पर पर्यावरण से उचित समायोजन करने की योग्यता |"

(Mental health means the ability to make adequate adjustment to the environment on the plane of reality.)

डॉ. माथुर के अनुसार, "मानसिक रूप से स्वस्थ वह व्यक्ति है जो जैविकीय कुशलता (biological efficiency) रखता है या समाज में अच्छी तरह से व्यवहार करता है या अच्छे नैतिक आदर्शों वाला होता है |"

ल्यूकर के शब्दों में, "मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति वह है जो स्वयं सुखी है अपने पड़ोसियों में शांतिपूर्वक रहता है अपने बच्चों को स्वस्थ नागरिक बनाता है और इन आधारभूत कर्त्तव्यों को रोकने के बाद भी जिसमें इतनी शक्ति बच जाती है जिससे कि वह समाज के हित के लिए भी कुछ कर सके |

मानसिक स्वास्थ्य का बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि पर भी काफी असर पड़ता है | एक मानसिक रूप से स्वस्थ बच्चा अस्वस्थ बच्चे की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से विभिन्न शैक्षिक परिवर्तनों तथा कार्यक्रमों को समझ सकता है तथा उनके अनरूप अपने को समायोजित कर कर सकता है| शिक्षा की सफलता के लिए केवल शिक्षार्थी ही नहीं अपितु शिक्षक का भी मानसिक रूप से स्वस्थ होना अति आवश्यक है |

शिक्षक के ऊपर बच्चों के निर्माण का उत्तरदायित्व होता है, इसलिए उसे राष्ट्र निर्माता कहा जाता है | इस उत्तरदायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह वह तभी कर सकता है, जब वह शारीरिक तथा मानसिक

दोनों दृष्टियों से स्वस्थ हो | अच्छे शिक्षकों में जिन गुणों स्वस्थ शरीर, उत्तम संवेगात्मक स्थिति, अपने व्यवसाय के प्रति सम्मान भाव, विनोदी स्वभाव, आत्मविश्वास, कर्त्तव्यनिष्ठा, बच्चों को पुत्र के समान मानना और उनके साथ प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार करना आदि का होना आवश्यक होता है, वे सब गुण उसमें तभी हो सकते हैं जब वह मानसिक रूप से स्वस्थ हो|

अतः हम देखते है कि बच्चों तथा उनके शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य भी बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करता है | यदि बच्चा तथा उसका शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ होगा तो बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी तथा यदि इनमें से किसी एक का भी मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो बच्चा शैक्षिक रूप से पिछड़ सकता है|

According to Healthy People 2010 (a statement of national health objectives developed in part by the U.S. Department of Health and Human Services):

"*Mental health is sometimes thought of as simply the absence of a mental illness but is actually much broader. "Mental health is a state of successful mental functioning, resulting in productive activities, fulfilling relationships, and the ability to adapt to change and cope with adversity. Mental health is indispensable to personal well-being, family and interpersonal relationships, and one's contribution to society."*

मनोसामाजिक और स्वास्थ्य की समस्याएँ सीखने और प्रदर्शन कला को प्रभावित करती हैं। इस तरह की समस्याएं हमारे युवकों के प्रदर्शन को प्रभावित करती रहती हैं और स्कूल में इन जानकारी को जाने बिना हमारे शिक्षक उन्हें दंडित करते हैं| यह हमारे शिक्षा प्रणाली की विफलता ही है | प्रत्येक स्कूल अपनी शैक्षणिक लाभ को प्रदर्शित करने के लिए समाज की विविधिता को जाने बिना हमारे बच्चों पर बेवजह दबाव डालते हैं | पिछले एक दशक से शोध अध्ययन और लगातार समीक्षा से यह निष्कर्ष निकला है कि छात्रों का स्वास्थ्य स्तर और उपलब्धि से गहरा सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। साक्ष्य

यह बताते हैं, कि छात्रों के बुनियादी विकास के लिए सुरक्षित आवास, स्वस्थ जीवन शैली उनके शैक्षणिक सुधार के लिए महत्त्वपूर्ण हैं| (लॉसन, निकोल्सन, & वेचे , 1997; मार्क्स, वोल्ले & नोर्थ्रूप ,1998; मिशेल, 2000)

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार (1952-53) *The underachievers need some form of special help or remedial education and guidance to overcome their difficulties and achieve up to the maximum of their potential. To plan remedial education and guidance programme for underachievers we need to know about the factors related to and their possible contribution towards underachievement."*

दूसरी ओर प्रत्येक माता-पिता की यह आकांक्षा होती है कि वह अपने बच्चों को सफल होते हुए देखे, इसके पीछे भी माता-पिता का भी अपना एक सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ होता है | जो सफलता सीखना और ज्ञान के उनके मापदंड को दर्शाता है|

आज इस भौगोलिकरण के युग में माता-पिता की अपने बच्चों से उत्कृष्टता की उम्मीदें बढ़ती जा रही हैं | इस बात को लेकर माता-पिता तनाव में हैं, जो अपने बच्चों को प्रसारित कर रहे हैं| व्याहारिक रूप से देखे तो तो बच्चों के पास समय ही नहीं है परन्तु वे स्कूल, ट्यूशन और गृह कार्य में लगे रहते हैं| खेलने का समय या तो कम हो गया है या तो कोई अस्तित्व ही नहीं है | यह छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायों को जन्म देता है | हमारे शिक्षा व्यवस्था को ऐसे ही समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और हमें अपने प्रयासों से इन समस्याओं को दूर करने की जरूरत है|

महमूद, मोहन (1998) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि शैक्षिक उपलब्धि में बच्चों के सामाजिक आर्थिक स्तर का भी प्रभाव पड़ता है | सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि में कला, विज्ञान और कामर्स में धनात्मक सम्बन्ध भी पाया गया |

हसीन (1999) ने अपने अध्ययन में पाया कि सामाजिक स्तर, माता-पिता के साथ बच्चों का अंतःक्रिया और व्यवहारों की निर्भरता सार्थक रूप से बच्चों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है |

लक्ष्मी (1997) ने अपने अध्ययन में पाया कि जो बच्चे अधिक शिक्षित परिवार से सम्बन्ध रखते हैं, उन्हें अकादमिक रूप से अधिक अभिप्रेरणा मिलती है|

1.5 समस्या कथन

उपरोक्त वर्णन के आधार पर हमारे सामने यह समस्या उभर आती है कि अभिभावकों की आकांक्षा बच्चों की उपलब्धि को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करती है| इसे हम औपचारिक रूप से ऐसे भी कह सकते हैं "अभिभावकीय आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन|"

1.5.1 पारिभाषिक शब्दावली

1.5.1.1 शैक्षणिक उपलब्धि:

Achievement is defined as "the measure of what and how much an individual has learnt. It may be the quality or quantity of learning attained by an individual in a subject of study after a period of instruction."

According to **Eyeseneck & Arnold**, in the **Encyclopedia of Psychology (1972)**, Achievement is defined as "General term for the successful attainment of goal requiring certain effort".

The dictionary of Education, **Good (1973),** defines Academic achievement as accomplishment or proficiency of performance in a given skill or body of knowledge.

1.5.1.2 उपलब्धि - कोई व्यक्ति क्या और कितना सीखा है इसका मापन करना ही उपलब्धि है, यह गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों हो सकता है किसी विषय के अध्ययन में एक निश्चित अवधि के अनुदेशन के बाद|

1.5.1.3 अभिभावकीय आकांक्षा - माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के प्रति लगायी जाने वाली आशाएँ |

1.6 शोध का लक्ष्य

प्रस्तुत शोध में छात्रों के अभिभावकीय आकांक्षा एवं उपलब्धि केमध्य सम्बन्ध ज्ञात करना है|

1.7 शोध उद्देश्य

1. कक्षा 7 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना |
2. विद्यार्थियों की अभिभावकीय आकांक्षा का अध्ययन करना |
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना|
4. ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धित आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना |
5. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना |

1.8 शोध प्रश्न

1 क्या अभिभावकों की आकांक्षाएं विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करती हैं?

2 क्या अभिभावकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है ?

3 क्या ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिकउपलब्धि एक समान हैं ?

4 क्या ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धिसम्बन्धित आकांक्षा एक समान हैं ?

1.9 परिकल्पना

H_{01}: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

H_{02}: ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि सम्बंधित आकांक्षा के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

H_{03}: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके अभिभावकों की आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है |

1.10 शोध का महत्त्व

आज के इस प्रतियोगी युग में प्रत्येक नागरिक सफलता के उच्चतम शिखर तक पहुँचना चाहता है| परन्तु सफलता प्राप्ति के लिए वह किन साधनों का का उपयोग करता है, यह बात मायने रखती है | प्रत्येक नागरिक की यह तमन्ना होती है कि वह एक सम्मानजनक नौकरी करे एवं यही आकांक्षा वह अपने बच्चों से भी रखता है, उनकी रुचि को ध्यान दिए बिना | यदि हम अपने बच्चे की रुचि एवं योग्यता को नजरअंदाज करते हुए अपने आकांक्षा के अनुसार उसे डॉक्टर या अभियांत्रिक के रूप में देखना चाहते हैं,तो यह बहुत ही असंभव कार्य है| हमें अपने बच्चे की रूचि एवं योग्यता के अनुसार कार्य करने देना चाहिए तभी हमारा बच्चा सफल होगा |

इस शोध के माध्यम से शोधार्थी इस तथ्य पर समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहता है कि हमें अपनी आकांक्षा अपने बच्चों पर नहीं थोपना चाहिए बल्कि उनकी रुचि के अनुसार वे जो बनना चाहते हैं, उन्हें स्वछन्द छोड़ देना चाहिए तभी हमारे बच्चे एक सफल नागरिक बन पायेंगे |

1.11 शोध का औचित्य

प्रत्येक अभिभावक की यह आकांक्षा होती है की हमारे बच्चे शिक्षित होकर एक सफल नागरिक बने| परन्तु अभिभावकों की आकांक्षा भी उच्च स्तर की ही होती है| बच्चों की क्षमता एवं रूचि को जाने बिना हमारे अभिभावक यह आकांक्षा रखते हैं कि हमारा बच्चा एक सफल चिकित्सक, अभियांत्रिक

एवं आई.ए.एस.अधिकारी ही बने हमारे अभिभावक यह नहीं जानने का प्रयास करते हैं कि हमारे बच्चे की रूचि क्या है ?

दूसरी ओर यदि हम अपना ध्यान आकर्षित करते हैंतो यह पाते हैं कि जब बच्चा स्कूल में प्रवेश करता है तो प्रत्येक अभिभावक का ध्यान बच्चों के स्कोर कार्ड पर रहता है यानि विगत परीक्षा में हमारा बच्चा कितना अंक हासिल किया| व्यक्तिगत भिन्नता (individual differences) का ध्यान देते हुए एवं प्रतिभाशाली बच्चों को छोड़कर यदि हम अपना ध्यान बच्चों के स्कोर कार्ड पर इंगित करते हैं तो पाते हैं कि अधिकांशबच्चों की उपलब्धि किसी न किसी एक विषय में कम ही रहती है| अमुक विषय में कम अंक क्यों है इसका पता लगाये बिना हमारे अभिभावक अपने बच्चोंसे यह अपेक्षा रखते हैं की प्रत्येक विषय में हमारे बच्चे काअधिक अंक क्यों नहीं हैं? आज की मूल्यांकन पद्धति चाहे कैसी भी क्यों न हो हमारे अभिभावकों की यह इच्छा होती है की हमारे बच्चे उच्चतम्से उच्चतम् शिखर पर पहुंचे|

यदि हम अपना ध्यान राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2005) पर इंगित करते हैं तो बच्चों के शैक्षिक मूल्यांकन में यह बात कही गयी है कि भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और दुश्चिंता सेजुड़ा हुआ है....शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादन जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए|

शैक्षिक उपलब्धि की वृद्धि के चक्कर में हमारी शिक्षा प्रणाली आज भी रटंत पद्धति को जन्म देती है| जैसे कि पॉल फ्रेरे द्वारा लिखित उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र में वे कहते हैं कि शिक्षक छात्रों को पात्र या बर्तन बना देते हैं, जिन्हें शिक्षक द्वारा भरा जाना होता है| जो इन पात्रों को जितना ज्यादा भर सके वह उतना ही अच्छा शिक्षक है| जो जितने दब्बूपन के साथ स्वयं को भरने दे, वे उतने ही अच्छे छात्र हैं| इस प्रकार शिक्षा बैंक में पैसा जमा करने के भांति छात्रों में ज्ञान राशि जमा करने कामाध्यम बन जाती है, जिसमे शिक्षक जमाकर्ता होता है और छात्र जमादार (डिपोजिटरी) होते हैं|

1.12 शोध का परिसीमन (Delimitation of the study)

1. प्रस्तुत शोध महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जनपद तक परिसीमित है |
2. यह शोध अग्रगामी हाई स्कूल तक सीमित है |
3. यह शोध कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक सीमित है |

****